''मीठे बच्चे – बाप के पास जो वक्खर (सामान) है, उसका पूरा ही अन्त तुम्हें मिला है, तुम उसे धारण करो और कराओ''

प्रश्नः- त्रिकालदर्शी बाप ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानते हुए भी कल की बात आज नहीं बताते हैं – क्यों?

उत्तरः- बाबा कहते – बच्चे अगर मैं पहले से ही बता दूँ तो ड्रामा का मजा ही निकल जाए। यह लॉ नहीं कहता। सब कुछ जानते हुए मैं भी ड्रामा के वश हूँ। पहले सुना नहीं सकता, इसलिए क्या होगा तुम उसकी चिंता छोड़ दो।

गीतः- मरना तेरी गली में...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) देवता बनने के लिए खान-पान की बहुत शुद्धि रखनी है। बहुत ही परहेज से चलना है। योगबल से भोजन को दृष्टि दे शुद्ध बनाकर स्वीकार करना है।

2) परमपिता परमात्मा के हम बच्चे अथवा स्टूडेन्ट हैं, वह हमें अब अपने घर ले जायेंगे, इसी नशे में रह परम सुख, परम आनन्द का अनुभव करना है।

वरदानः- सेवा की लगन द्वारा लौकिक को अलौकिक प्रवृत्ति में परिवर्तन करने वाले निरन्तर सेवाधारी भव

सेवाधारी का कर्तव्य है निरन्तर सेवा में रहना – चाहे मनसा सेवा हो, चाहे वाचा वा कर्मणा सेवा हो। सेवाधारी कभी भी सेवा को अपने से अलग नहीं समझते। जिनकी बुद्धि में सदा सेवा की लगन रहती है उनकी लौकिक प्रवृत्ति बदलकर ईश्वरीय प्रवृत्ति हो जाती है। सेवाधारी घर को घर नहीं समझते लेकिन सेवास्थान समझकर चलते हैं। सेवाधारी का मुख्य गुण है त्याग। त्याग वृत्ति वाले प्रवृत्ति में तपस्वीमूर्त होकर रहते हैं जिससे सेवा स्वत: होती है।

स्लोगनः- अपने संस्कारों को दिव्य बनाना है तो मन-बुद्धि को बाप के आगे समर्पित कर दो।

अव्यक्त इशारे

महान बनने के लिए मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

किसी भी आत्मा को दो घड़ी मीठी दृष्टि दे दो। मीठे बोल बोल दो तो उस आत्मा को सदा के लिए भरपूर कर देंगे। यह दो घड़ी की मधुर दृष्टि, बोल उस आत्मा की सृष्टि बदल देंगे। दो मधुर बोल सदा के लिए बदलने के निमित्त बन जायेंगे।

''मीठे बच्चे – जब भी समय मिले तो एकान्त में बैठ सच्चे माशूक को याद करो क्योंकि याद से ही स्वर्ग की बादशाही मिलेगी''

प्रश्नः- बाप मिला है तो कौन-सा अलबेलापन समाप्त हो जाना चाहिए?

उत्तरः- कई बच्चे अलबेले हो कहते हैं हम तो बाबा के हैं ही। याद की मेहनत नहीं करते। घड़ी-घड़ी याद भूल जाती है। यही है अलबेलापन। बाबा कहते बच्चे, अगर याद में रहो तो अन्दर स्थाई खुशी रहेगी। किसी भी प्रकार का घुटका नहीं आयेगा। जैसे बांधेलियाँ याद में तड़फती हैं, दिन-रात याद करती हैं, ऐसे तुम्हें भी निरन्तर याद रहनी चाहिए।

गीतः- तकदीर जगाकर आई हूँ...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) हर कार्य करते हुए आत्म-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस करनी है। देह का अहंकार समाप्त हो जाए, इसके लिए ही मेहनत करनी है।

2) सतयुगी राजाई के लायक बनने के लिए अपने मैनर्स रॉयल बनाने हैं। पवित्रता ही सबसे ऊंची चलन है। पवित्र बनने से ही पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे।

वरदानः- करन-करावनहार की स्मृति द्वारा सहजयोग का अनुभव करने वाले सफलतामूर्त भव

कोई भी कार्य करते यही स्मृति रहे कि इस कार्य के निमित्त बनाने वाला बैकबोन कौन है। बिना बैकबोन के कोई भी कर्म में सफलता नहीं मिल सकती, इसलिए कोई भी कार्य करते सिर्फ यह सोचो मैं निमित्त हूँ, कराने वाला स्वयं सर्व समर्थ बाप है। यह स्मृति में रख कर्म करो तो सहज योग की अनुभूति होती रहेगी। फिर यह सहजयोग वहाँ सहज राज्य करायेगा। यहाँ के संस्कार वहाँ ले जायेंगे।

स्लोगनः- इच्छायें परछाई के समान हैं आप पीठ कर दो तो पीछे-पीछे आयेंगी।

अव्यक्त इशारे

महान बनने के लिए मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

मधुरता ऐसी विशेष धारणा है जो कड़वी धरनी को भी मधुर बना देती है। आप सभी को बदलने का आधार बाप के दो मधुर बोल हैं। मीठे बच्चे तुम मीठी शुद्ध आत्मा हो। इन दो मधुर बोल ने ही बदल दिया। मीठी दृष्टि ने बदल दिया। ऐसे ही मधुरता द्वारा औरों को भी मुधर बनाओ। यह मुख मीठा करो। सदा इस मधुरता की सौगात को साथ रखो। इसी से सदा मीठा रहेंगे और मीठा बनायेंगे।

''मीठे बच्चे – तुम देह अभिमान का द्वार बन्द कर दो तो माया के तूफान आना बन्द हो जायेंगे''

प्रश्नः- जिन बच्चों की विशाल बुद्धि है, उनकी निशानियाँ सुनाओ!

उत्तरः- 1- उन्हें सारा दिन सर्विस के ही ख्यालात चलते रहेंगे। 2- वह सर्विस के बिगर रह नहीं सकते। 3- उनकी बुद्धि में रहेगा कि कैसे सारे विश्व में घेराव डाल सबको पतित से पावन बनायें। वह विश्व को दु:खधाम से सुखधाम बनाने की सेवा करते रहेंगे। 4- वह बहुतों को आप समान बनाते रहेंगे।

धारणा के लिये मुख्य सार:-

1) अपने आप से प्रण करना है कि हम अपना टाइम वेस्ट नहीं करेंगे। संगम का हर पल सफल करेंगे। हम बाबा को कभी नहीं भूलेंगे। स्कॉलरशिप लेकर ही रहेंगे।

2) सदा स्मृति रहे कि अभी हमारी वानप्रस्थ अवस्था है। पाँव नर्क तरफ, सिर स्वर्ग तरफ है। बाजोली को याद कर अथाह खुशी में रहना है। देही-अभिमानी बनने की मेहनत करनी है।

वरदान:- अपने सर्वश्रेष्ठ पोजीशन की खुमारी द्वारा अनेक आत्माओं का कल्याण करने वाले अथॉरिटी स्वरूप भव

हम आलमाइटी अथॉरिटी के बच्चे हैं – यह है सर्वश्रेष्ठ पोजीशन, इस पोजीशन की खुमारी में रहो तो माया की अधीनता समाप्त हो जायेगी। इसी अथॉरिटी का स्वरूप बनने से किसी भी आत्मा का कल्याण कर सकते हो। जो सदा इस खुमारी में रहते हैं वो सदाकाल का राज्य भाग्य प्राप्त करते हैं। यही अथॉरिटी सदा कायम रखो तो विश्व आपके आगे झुकेगी, आप किसी के आगे झुक नहीं सकते।

स्लोगन:- करावनहार बाप की स्मृति से मैं पन को समाप्त करो।

अव्यक्त इशारे

महान बनने के लिए मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

मधुरता द्वारा बाप के समीपता का साक्षात्कार कराओ। आपके संकल्प में भी मधुरता, बोल में भी मधुरता, कर्म में भी मधुरता हो – यही बाप की समीपता है इसलिए बाप भी रोज़ कहते हैं – 'मीठे-मीठे बच्चों' और बच्चे भी रेस्पॉन्ड करते – 'मीठे-मीठे बाबा'। यही रोज़ का मधुरता का बोल मधुर बना देता है।

''मीठे बच्चे – तुम अभी सत्य बाप द्वारा सच्ची बातें सुन सोझरे में आये हो तो तुम्हारा कर्तव्य है सबको अन्धियारे से निकाल सोझरे में लाना''

प्रश्नः- जब तुम बच्चे किसी को ज्ञान सुनाते हो तो कौन-सी एक बात ज़रूर याद रखो?

उत्तरः- मुख से बार-बार बाबा बाबा कहते रहो, इससे अपना-पन समाप्त हो जायेगा। वर्सा भी याद रहेगा। बाबा कहने से सर्वव्यापी का ज्ञान पहले से ही खत्म हो जाता है। अगर कोई कहे भगवान सर्वव्यापी है तो बोलो बाप सबके अन्दर कैसे हो सकता है!

गीतः- आज अन्धेरे में है इन्सान...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) सिर पर जो पापों का बोझ है उसे योग अग्नि से भस्म करना है। बुद्धि से देह सहित देह के सब सम्बन्ध छोड़ एक बाप को याद करना है।
2) पुकारने वा चिल्लाने के बजाए अपने शान्त स्वधर्म में स्थित रहना है, शान्ति गले का हार है। देह-अभिमान में आकर 'मैं' और 'मेरा' शब्द नहीं कहना है, स्वयं को आत्मा निश्चय करना है।

वरदानः- अपनी सतोगुणी दृष्टि द्वारा अन्य आत्माओं की दृष्टि, वृत्ति का परिवर्तन करने वाले साक्षात्कारमूर्त भव

कहावत है दृष्टि से सृष्टि बदलती है। तो आपकी दृष्टि ऐसी सतोगुणी हो जो कैसी भी तमोगुणी वा रजोगुणी आत्मा की दृष्टि, वृत्ति और उनकी स्थिति बदल जाये। जो भी आपके सामने आये उन्हें दृष्टि द्वारा तीनों लोकों का, अपनी पूरी जीवन कहानी का मालूम पड़ जाये – यही है नज़र से निहाल करना। अन्त में जब ज्ञान की सर्विस नहीं होगी तब यह सर्विस चलेगी।

स्लोगनः- पवित्रता का प्रैक्टिकल स्वरूप सत्यता अर्थात् दिव्यता है।

अव्यक्त इशारे

महान बनने के लिए मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

मधुरता और नम्रता का गुण झुकना सिखाता है। जितना अभी आप संस्कारों में, संकल्पों में झुकेंगे उतना विश्व आपके आगे झुकेगी। झुकना अर्थात् झुकाना। संस्कार में भी झुकना। यह संकल्प भी न हो दूसरे हमारे आगे भी तो कुछ झुकें! हम झुकेंगे तो सभी झुकेंगे। जो सच्चे सेवाधारी होते हैं वह जब सभी के आगे झुकेंगे तब सेवा कर सकेंगे।

''मीठे बच्चे – बाप आये हैं, भारत को सैलवेज करने, तुम बच्चे इस समय बाप के मददगार बनते हो, भारत ही प्राचीन खण्ड है''

प्रश्नः- ऊंची मंजिल में रुकावट डालने वाली छोटी-छोटी बातें कौन-सी हैं?

उत्तरः- अगर ज़रा भी कोई शौक है, अनासक्त वृत्ति नहीं है। अच्छा पहनने, खाने में बुद्धि भटकती रहती है... तो यह बातें ऊंची मंजिल पर पहुंचने में अटक (रुकावट) डालती हैं इसलिए बाबा कहते बच्चे, वनवाह में रहो। तुम्हें तो सब कुछ भूलना है। यह शरीर भी याद न रहे।

धारणा के लिये मुख्य सार:-

1) बुद्धि से बेहद का सन्यास करना है। वापस घर जाने का समय है इसलिए पुरानी दुनिया और पुराने शरीर से अनासक्त रहना है।
2) ड्रामा की हर सीन को देखते हुए सदा हर्षित रहना है।

वरदान:- बापदादा को अपना साथी समझकर डबल फोर्स से कार्य करने वाले सहजयोगी भव

कोई भी कार्य करते बापदादा को अपना साथी बना लो तो डबल फोर्स से कार्य होगा और स्मृति भी बहुत सहज रहेगी क्योंकि जो सदा साथ रहता है उसकी याद स्वत: बनी रहती है। तो ऐसे साथी रहने से वा बुद्धि द्वारा निरन्तर सत का संग करने से सहजयोगी बन जायेंगे और पावरफुल संग होने के कारण हर कर्तव्य में आपका डबल फोर्स रहेगा, जिससे हर कार्य में सफलता की अनुभूति होगी।

स्लोगन:- महारथी वह है जो कभी माया के प्रभाव में परवश न हो।

अव्यक्त इशारे

महान बनने के लिए मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

मधुरता ही ब्राह्मण जीवन की महानता है। जहाँ मधुरता है वहाँ पवित्रता है। बिना पवित्रता के मधुरता आ नहीं सकती। जितना बुद्धि में नशा हो, उतना ही कर्म में नम्रता और बोल में मधुरता हो। ऐसे नशे में रहने से कभी नुकसान नहीं होगा। सिद्धि को पाने वाले, स्वयं को नम्रचित्त, निर्माण, हर बात में अपने आपको गुणग्राहक और मधुरता सम्पन्न बनायेंगे।

''अन्तर्मुखी बच्चे – ज्ञान रूप अवस्था में रहकर इन महावाक्यों को धारण करो तब अपना व अन्य आत्माओं का कल्याण कर सकेंगे'' (दादियों की डायरी से)

- ❖ अन्तर्मुख अवस्था से ही अचल, स्थिर, धैर्यवत, निर्मान-चित्त इत्यादि दैवी गुणों की धारणा हो सकती है तथा सम्पूर्ण ज्ञानमय अवस्था प्राप्त हो सकती है।
- ❖ वास्तव में सर्विस का अर्थ अति सूक्ष्म और महीन है। ऐसा नहीं कि किसकी भूल पर सिर्फ सावधान करना इतने तक सर्विस है। परन्तु नहीं, उनको सूक्ष्म रीति अपनी योग की शक्ति पहुँचाए उनके अशुद्ध संकल्प को भस्म कर देना, यही सर्वोत्तम सच्ची सर्विस है।
- ❖ तुम्हें एक दो की प्रेम भरी सावधानी को स्वीकार करना है। तुम्हें भी जब कोई सावधानी देता है तो समझना चाहिए जैसेकि उसने मेरी परवरिश की अर्थात् मेरी सर्विस की। उस सर्विस अथवा परवरिश को रिगार्ड देना है, यही सम्पूर्ण बनने की युक्ति है।
- ❖ ईश्वर में दोनों ही क्वालिटीज़ समाई हुई हैं परन्तु फर्स्ट ज्ञान, सेकण्ड प्रेम। अगर कोई पहले ज्ञान रूप बनने बिगर सिर्फ प्रेम रूप बन जाता है तो वह प्रेम अशुद्ध खाते में ले जाता है, पहले ज्ञान रूप बन फिर प्रेम इमर्ज करना है। ज्ञान बिगर सिर्फ प्रेम इस पुरुषार्थी जीवन में विघ्न डालता है।

धारणा के लिये मुख्य सार:-

1) अपने लक्ष्य स्वरूप की स्मृति से शान्तचित्त, निर्मानचित्त, धैर्यवत, मिठाज, शीतलता आदि सर्व दैवी गुण धारण करने है।
2) निश्चयबुद्धि साक्षीदृष्टा हो इस खेल को हर्षित चेहरे से देखते आन्तरिक धैर्यवत और अडोल-चित्त रहना है। बहुत समय से लेकर इस साक्षीपन की अवस्था में स्थित रहने का पुरुषार्थ करना है।

वरदान:- एक ही रास्ता और एक से रिश्ता रखने वाले सम्पूर्ण फरिश्ता भव

निराकार वा साकार रूप से बुद्धि का संग वा रिश्ता एक बाप से पक्का हो तो फरिश्ता बन जायेंगे। जिनके सर्व सम्बन्ध वा सर्व रिश्ते एक के साथ हैं वही सदा फरिश्ते हैं। जैसे गवर्मन्ट रास्ते में बोर्ड लगा देती है कि यह रास्ता ब्लॉक है, ऐसे सब रास्ते ब्लॉक (बन्द) कर दो तो बुद्धि का भटकना छूट जायेगा। बापदादा का यही फरमान है – कि पहले सब रास्ते बन्द करो। इससे सहज फरिश्ता बन जायेंगे।

स्लोगन:- सदा सेवा के उमंग-उत्साह में रहना – यही माया से सेफ्टी का साधन है।

अव्यक्त इशारे

महान बनने के लिए मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

आपका बोल और स्वरूप दोनों साथ-साथ हों – बोल स्पष्ट भी हों, उसमें स्नेह भी हो, नम्रता और मधुरता भी हो। सत्यता भी हो लेकिन स्वरूप की नम्रता भी हो, इसी रूप से बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे। निर्भय हो लेकिन बोल मर्यादा के अन्दर हों – जब इन दोनों बातों का बैलेन्स हो तब कमाल दिखाई देगी। फिर आपके शब्द कड़े नहीं, मीठे लगेंगे।

''बाप वा सर्व का प्रिय बनने के लिए सन्तुष्टमणि बन हर परिस्थिति के प्रभाव से मुक्त रहो''

- आज चारों ओर के सन्तुष्ट आत्माओं को देख रहे हैं। सन्तुष्ट मणियाँ चारों ओर अपने मणि की चमक फैला रही हैं। सबसे बड़े से बड़ी स्थिति है ही सन्तुष्टता की। सदा सन्तुष्ट वही रह सकता है जिसको सर्व प्राप्तियाँ हैं।
- सन्तुष्ट आत्मा की स्थिति सदा प्रगतिशील रहती है। इस स्थिति में रहने के लिए बहुत साक्षी दृष्टा अवस्था चाहिए, त्रिकालदर्शी अवस्था चाहिए।
- इसके लिए दो बातें आवश्यक हैं। वह दो बातें हैं सम्बन्ध और सम्पत्ति। जब अविनाशी सम्पत्ति और सम्बन्ध प्राप्त हो जाता तो आत्मा सदा सन्तुष्ट और बाप की, सर्व आत्माओं की अति प्रिय हो जाती है।
- वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति, यह है पानी देना और स्वरूप में स्थित होना यह है धूप लगाना। तो यह फलीभूत होने से स्वयं में भी बहुत शक्ति भरती है और दूसरे को भी उस फल द्वारा शक्ति का अनुभव करा सकते हैं।
- यह 15 दिन हर एक को संकल्प, वाणी और कर्म में कम से कम 80 प्रतिशत मार्क्स लेनी हैं। संकल्प भी वेस्ट नहीं, युद्ध नहीं विजयी। 15 दिन के फुल विजयी। सबको 15 दिन का रिकार्ड रखना है। क्या, क्यों का क्वेश्चन न उठे, क्या करें बात ही ऐसी हुई यह नहीं बताना।

वरदान:- बाप के हाथ और साथ की स्मृति से मुश्किल को सहज बनाने वाले बेफिक्र वा निश्चित भव

जैसे किसी बड़े के हाथ में हाथ होता है तो स्थिति बेफिक्र वा निश्चित रहती है। ऐसे हर कर्म में यही समझना चाहिए कि बापदादा मेरे साथ भी हैं और हमारे इस अलौकिक जीवन का हाथ उनके हाथ में है अर्थात् जीवन उनके हवाले है, तो जिम्मेवारी भी उनकी हो जाती है। सभी बोझ बाप के ऊपर रख अपने को हल्का कर दो। बोझ उतारने वा मुश्किल को सहज करने का साधन ही है – बाप का हाथ और साथ।

स्लोगन:- पुरुषार्थ में सच्चाई हो तो बापदादा की एक्स्ट्रा मदद का अनुभव करेंगे।

अव्यक्त इशारे

महान बनने के लिए मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

अगर आप से कोई टक्कर लेता है तो आप उसे अपने स्नेह का पानी दो, आप अपने मधुरता और नम्रता के गुण को नहीं छोड़ो। नम्रता की ड्रेस पहनकर रहो। यह नम्रता ही कवच है, जो सेफ्टी का साधन है। संस्कारों की रास मिलाने का सबसे सहज तरीका है – स्वयं नम्रचित और मधुरता सम्पन्न बन जाओ, दूसरे को श्रेष्ठ सीट दे दो।